प्रतिदिन अखबार

पास-पड़ोस

अमरावती, गुरुवार, 27 जुलाई 2017 | 16

स्वार्थ की दुनिया, स्वार्थ का है प्यार

प.पू. श्री सुप्रभसागरजी महाराज का प्रवचन

प्रतिनिधि, 26 जुलाई

अमरावती- जीवन जीने की कला सिखाती है जिनदेशना और दुःखों की नशाती है वला जिनवाणी. निज की शरण ही निज को समाधि-मरण तक ले जायेगी. पर की शरण खोजते-खोजते अनंतो द्वार बदल डाले फिर भी कोई शरण नहीं दे सका. अर्थात अशरण ही अशरण है संसार. स्वयं की रक्षा के कितने भी ऊंचे भवन बना लेना, बड़े-बड़े पहलवानों जैसे रक्षक खड़े कर लेना, मंत्र-तंत्र विधायें सीख लेना, देवी-देवताओं की आराधना करते रहना, धन सम्पत्ति संग्रहित कर लेना फिर भी कोई शरण नहीं है, रक्षक नहीं है, राखन हारे नहीं है. दलबल देवी देवता, माता-पिता परिवार, मरती विरिया जीव को कोई न राखन हार. अशरण भावना को समझकर हमें पर में आलम्बित नहीं अब स्वावलम्बी होना होगा, अपने आप में रहना होगा. स्वार्थ की भावना से दूर होकर वास्तविक भावना को जन्म देना है जो हमारा पूर्ण साथ दे सके, शरण बन सके. स्वारथ का संसार है, स्वारथ वश है प्यार. स्वार्थ पूर्ण के होन पर, छोड़ देत मझधार. गुरु पूर्ण अनुभव से अपने शिष्य को समझाते हैं कि बेटा संसार में कोई किसी का नहीं होता. सभी स्वार्थवश प्रीति दिखाते हैं. शिष्य इस बात को मानने तैयार नहीं था, उसे अपने माता-पिता, पत्नी, भाई, बेटे पर इतना विश्वास था कि सभी उसको प्रेम करते हैं, उसके बिन कोई नहीं रह सकता है. पर गुरु उससे परीक्षा लेने को कहते हैं कि परीक्षा लो कितने लोग तुम्हारे हैं, कौन तेरे साथ जाने को तैयार है. सांस रोककर (प्राणायाम करके) लेट जाना. जब तक मैं नहीं आऊं और तुम्हारे ऊपर जल न डालूं. शिष्य परिवार वालों की परीक्षा लेने को तैयार हो गया. घर जाकर गुरु द्वारा बताई क्रिया करके लेट जाता है.

पत्नी उठाती है तो नहीं उठे खूब हिलाया खूब आवाज लगाई, पूरा परिवार एकत्रित हो गया, रोना चिल्लाना शुरू हो गया, कि बेटा कहां चला गया तू मुझे अकेला बेसहारा करके. पत्नी अपने को, पुत्र अपने को, भाई-बहन अपने को रो-रोकर चिल्ला रहे थे.

पूरा मोहल्ला एक हो गया, वहां गुरुजी भी आये और कहते हैं क्या हुआ? सभी ने कहा आपका शिष्य मर गया है. गुरु बोले इसको मर जाने दो. मां-बाप और पत्नी बेटा विनती करते हैं कि आप कुछ करके मेरे पति को बचा दीजिए. गुरु कहते हैं कि एक कटोरे में जल लाओ और जल आते ही उन्होंने मंत्र पढ़ औषधि घोल दी और कहा जिसे इस बेटे को जीवित करना है वह इसे पी जाए, लेकिन बेटा जीवित होगा, पीने वाला मर जायेगा. यह सुनकर सभी ने मना कर दिया. कोई भी आगे नहीं आया. स्पष्ट कहने लगे मरने वाला तो मर ही गया मैं क्यों मरूं. मैं अपना जीवन क्यों समाप्त करूं. मैंने अभी दुनिया देखी ही क्या है? पत्नी कहती है मैं बेटे के सहारे जी लूंगी. मां-बाप बोले मेरे पास दो बेटा-बेटी हैं, बहन बोली मैं पराये घर की हूं. पुत्र बोला मेरी उम्र छोटी है. जब बड़े-बड़े लोग नहीं जा रहे तो मैं पीकर क्यों मरूं. गुरुजी बोले क्या मैं पीलूं? सभी एक स्वर में बोले हां-हां गुरुजी आप तो महान हैं आपका शिष्य है. आपके आगे पीछे कोई नहीं है. गुरुजी ने जल शिष्य के ऊपर डाला और उठकर गुरुजी के चरणों में क्षमा याचना करके कहता है कि मैंने जान लिया कि स्वार्थ की दुनिया है. कोई शरण नहीं.

स्वार्थ की दुनिया, न साथी कोई किसी का
शरण ही अशरण बने, पर शरण कोई न किसी का
जागो रे चेतन इस नींद से, भ्रम का सपना तोड़ दो
शरण जहां है तेरी अपनी, उस पथ में मन को मोड़ दो.

वंदना पाप की वृत्ति का नाश करती है

प.पू. अतुलप्रभाश्री मसा का प्रवचन

जैन श्वेतांबर दादावाड़ी संस्थान

प्रतिनिधि, 26 जुलाई

अमरावती- मनुष्य जीवन में हम भाव से वंदना नहीं करते. ऊपरी वंदना को महत्व देते हैं. समय अभाव का बहाना बनाकर की जाने वाली वंदना केवल वंदना ही होती है. उसमें कोई भाव छिपा नहीं होता. इस वंदना से हमें न तो कोई लाभ मिलता है और न ही हम ईश्वर के पास पहुंचते हैं. केवल और केवल समय बचाने का प्रयास होता है. जिस प्रकार हमारे शरीर की ऊर्जा पैरों के अंगूठे में समाई होती है. उसी प्रकार सच्चे भाव व मन से जब हम वंदना करते हैं, उससे हमारे जीवन की पाप वृत्ति का नाश होता है, ये बातें प.पू. अतुलप्रभाश्री मसा ने अपने प्रवचन में कही.

बुधवार को जैन श्वेतांबर दादावाड़ी संस्थान के श्री विचक्षण धाम में नित्य प्रवचन में साध्वीश्री ने कहा कि जीवन में शीतलता का भाव होना आवश्यक है. अगर वह नहीं है तो हमें वंदना को कोई लाभ प्राप्त नहीं होगा. इसलिए वंदना का लाभ प्राप्त करना हो तो हमें शास्त्रोंक्त पद्धति से भाव जगत से वंदना का लाभ लेना होगा. फेटा वंदना में महाराज साहब को रोक कर उनसे पूछताछ कर सेवा की आवश्यकताओं को जानना ही सही मायनों में फेटा वंदना होती है. ठोक वंदना अर्थात ठोमी का पाठ करने की अनुमति मांगना, ईश्वर से आज्ञा मांगना ही ठोक वंदना होती है. जिस व्यक्ति में शालीनता होती है. उसके आचरण से ही उसका अनुभव हो जाता है. वंदना में विवेक होता है. अनुकूलता होती है. वातावरण में भाव से वंदना करें तर्क से नहीं. इसलिए ठोक वंदना यह सोच-समझकर करनी चाहिए. ह्यद्वादशवृत्त वंदनाह्ल यह अपने गुरु, बड़े, कार्य के प्रति वंदना होती है. जिन्होंने हमारे जीवन को नई दिशा प्रदान की, ऐसे व्यक्ति को वंदन करना ही ह्यद्वादशवृत्त वंदनाह्ल होती है.

साध्वीश्री ने इस प्रसंग को सरल शब्दों में कहा कि एक सेठ अंतरभाव से ईश्वर की आराधना करता था. वह अचानक विराधना की ओर चला गया. पतन मार्ग में इतना नीचे गिरा कि उसका आयुष्य बदल गया. वह अब मेंढ़क योनी में जन्मा, लेकिन उसके मन के भाव ईश्वर की आराधना में वंदन में लीन थे. जीवन में एक पाप भी हमारे लिए परिवर्तन लाता है. हम तो मनुष्य योनी में 18 पाप करते हैं. एक दिन राजगढ़ में भगवान महावीर स्वामी का आगमन हुआ. यह बात मेंढ़क को जैसे ही पता चली, वह नंदपुष्कर्णी जलाशय से निकल पड़ा. रास्ते में उसे शैनिक राजा का सैन्य मिला. कुछ समय बाद वो दोनों साथ ही चल रहे थे. मन में केवल एक ही भाव था. हमें स्वामी को वंदन करना है. साथ चलते-चलते सैनिक के रथ का पहियां मेंढ़क के शरीर से गुजरा. ऐसी स्थित में भी मेंढक के किसी कोने में यह भाव था कि मैं स्वामी को वंदन कर पाऊं. मेंढ़क योनी से निकलकर वह सेठ देवगति में जन्मा. जिसके साथ उसे परमात्मा के वंदनों का लाभ मिला. वंदन भाव जितना ऊंचा होगा, उसका लाभ हमें हमेशा मिलता रहेगा. भगवान श्रीकृष्ण के पुत्रों का वर्णन करते हुए साध्वीश्री ने उनके पुत्रों ने किस प्रकार वंदना का मार्ग अपनाया, उसका वर्णन किया. ह्यभागों के रोग से, पाप के त्याग से जीवन को बचा लो...ह्ल इस भजन के साथ हर दिन उपवास करने का अभिनंदन किया गया.

मानव की प्रकृति-स्वभाव अलग-अलग

किरणसुधाजी मसा का प्रवचन

जैन स्थानक में चातुर्मास

प्रतिनिधि, 26 जुलाई

अमरावती- बडनेरा रोड स्थित जैन स्थानक में जारी चातुर्मास प्रवचन श्रृंखला में किरणसुधाजी मसा ने फरमाया कि मनुष्य इस धरती पर मेहमान बनकर आया है कुछ दिन के लिए. कहां जाना निश्चित नहीं है, लेकिन कहां जाना है उसकी पूर्व तैयारी यहां इस भव में कर सकते हैं. मानव सब दिखने में एक समान हैं, लेकिन प्रकृति-स्वभाव में सब अलग-अलग हैं. एक मां के उदर से जन्म लेनेवाले भी एक समान नहीं हैं, स्वभाव अलग-अलग होता है. मनुष्य के परिभ्रमण करने के चार स्टेशन हैं. नरक, तिर्यच, मनुष्य और देवगति.

नरक से आनेवाली आत्मा-जीव में पल-पल में गुस्सा, क्रोध करना, शीतलता-शांतता जिसके जीवन में नहीं है. नरक से आनेवाले जीव में भय संज्ञा अधिक होती है भले ही अशुभ कर्मों की निर्जरा हुई तो मानव भव मिला. तिर्यच गति से आए हुए जीव में कपट, माया अधिक मात्रा में है. जिसमें सरलता नहीं, माया, कपट है वह तिर्यच गति में जाता है तिर्यच गति से आए हुए जीव से एक नवकार जी भी नहीं कर सकता. तप का विचार भी नहीं कर सकता. मनुष्य गति से आए हुए जीव में अकड़, अहंकार, मान की मात्रा अधिक होती है. मान को 8 फन है. कहीं से भी काटे नुकसान है. विषय-वासना की अधिकता है. विकार से भरपूर है. कुत्ता हड्डी चबाता है, हड्डी में कोई रस नहीं है, हड्डी मसुड़ों को लगने से रक्त आता है, उसे लगता है कि हड्डी में से खून मिल रहा है. विषय वासना भी हड्डी के जैसी है. रस कुछ भी नहीं. देवगति-इस जीव में लोभ, कल्याण ज्यादा है. परिग्रह संज्ञा अधिक है.

ज्ञानी का 8वां लक्षण- निर्लोभी- पाप का बाप लोभ, पाप की मां इच्छा को मारकर विजय प्राप्त करो. चरण सिर्फ एक के ही पकड़ों परमेश्वर के. कितना कमाया, कितना इकठ्ठा किया सब यहीं के यहीं छोड़कर जाना है. 'मूरख नर किस विध माया जोड़ी' इस सावन की कुछ पंक्तियां गाई. दौड़ते जाओ-दौड़ते जाओ फिर भी धन का आकर्षण खत्म नहीं होता. राजा भतृहरि संन्यासी बन गए. जंगल में गए. गुफा के बाहर राजा को एक रत्न मिला. देखा कीमती है. उसी समय दो दोस्त घोड़े पर से जा रहे थे दोनों रत्न लेने कूद पड़े. गहरी दोस्ती लोभ के कारण भूलकर रत्न के पीछे भागे. लड़ते-लड़ते तलवारे निकल गईं. दोनों के प्राण निकल गए. हीरा तो वहीं का वहीं रह गया, लेकिन दो जिगरी दोस्त प्राण गंवा बैठे. राजा यह सब देख रहे थे. यह है लोभ का भयंकर परिणाम. भाई-भाई के प्रेम को तोड़ने वाला, अलग-अलग करने वाला लोभ ही है. ज्ञानी कहते हैं हमें निर्लोभी बनना है. टोपी बेचने का काम एक फकीरभाई करता था. आप टोपी क्यों बना रहे हो, आपको कितना पैसा होना है, मैं आपको देता हूं. तब उस भाई ने कहा तुम्हारा पैसा अनीति, अन्याय का है, मुझे नहीं चाहिए. मेरा भले ही कम कमाई का धंधा है वह मुझे मान्य है. आज हम दान देते हैं, लेकिन उस दान का भी दुरुपयोग करते हैं. अगर अनीति का पैसा दान के उपलक्ष्य में देते हैं तो वह दान निष्फल जाता है. उससे वह दान पानेवाला दुरुपयोग कर गलत रास्ते पर चल पड़ता है. नीति का अगर थोड़ा ही सही दान में दे तो वह दान लेनेवाला सन्मार्ग की ओर चल पड़ता है. श्रावक के लक्षण में सर्वप्रथम लक्षण है कि श्रावक न्याय संपन्न व नीति संपन्न हो.

वाशिम में श्रीमद् भागवत ज्ञानयज्ञ सप्ताह कल से

श्री गायत्री सत्संग मंडल व अग्रवाल समाज का आयोजन

प्रतिनिधि, 26 जुलाई

वाशिम- स्थानीय गोकुलधाम अग्रसेन भवन में 28 जुलाई से 3 अगस्त तक आचार्य विजय प्रकाश दायमा की वाणी में श्रीमद् भागवत ज्ञानकथा सप्ताह का आयोजन किया गया है. कथा श्रवण समय दोपहर 12 से 5 बजे तक रखा गया है.

भागवत सप्ताह के मुख्य यजमान रेणु कमल किशोर अग्रवाल, विमला रामकिसन पंचारिया, वर्षा आतिश मंत्री, पद्मा घनश्याम शर्मा हैं. हर वर्ष श्रावण मास में गायत्री सत्संग मंडल व अग्रवाल समाज के विशेष सहयोग से यह आयोजन किया जाता है. भागवत कथा में 28 जुलाई को नारद व्यास संवाद, गोकर्ण महात्म्य, शुकदेवजी आगमन, 29 जुलाई को मनुकर्दम चरित्र, ध्रुव व्याख्यान, कपिल उपदेश, शिवचरित्र, 30 जुलाई को भरतचरित्र, दाधिचीचरित्र, अजमिलोद्धार, नृसिंह अवतार, समुद्र मंथन, 31 जुलाई को वामन अवतार, श्रीरामचरित, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, 1 अगस्त को श्रीकृष्ण बाललीला, श्री गोवर्धन पूजा, श्रीकृष्ण रुक्मिणी विवाह, 2 अगस्त को द्वारका लीला, सुदामा पूजन, 3 अगस्त को परीक्षित मोक्ष, उद्धव गीता, दत्तचरित्र होगा. 4 अगस्त को गायत्री हवन, सुंदरकांड पठन दोपहर 12.30 से 3 बजे तक महाप्रसाद बंटेगा. सभी भक्तों से भागवत कथा व महाप्रसाद का लाभ लेने का अनुरोध आयोजकों ने किया है.

श्रीमद् भागवत कथा के तहत विविध समितियां बनाई गई हैं. स्वागत समिति में आसाराम अग्रवाल, रामनारायण अग्रवाल, गोविंदराम मंत्री, भगवानदास दागड़िया, राजाराम शर्मा, द्वारकादास बाहेती, रामभाऊ खत्री, नरेंद्रप्रसाद अग्रवाल सेवाएं दे रहे हैं. उत्सव समिति में संतोष कुमार अग्रवाल, सत्यनारायण साबू, डॉ. पंकज दागड़िया, पुरुषोत्तम दुरतकर, प्रकाश आंबटपुरे, सुरेशचंद्र भारुका, सुरेश लोथ, दुर्गाप्रसाद वर्मा का समावेश है. अर्थ समिति की जिम्मेदारी श्रीराम धुत, गोपाल अग्रवाल, सत्यनारायण गिल्डा, कमलकिशोर बंग व राजेश देवाणी को सौंपी गई है. स्वयंसेवक समिति में कैलाश अग्रवाल, प्रकाश अग्रवाल, अशोक मंत्री, हेमंत औंधिया, दिलीप अरगले, पंकज गढ़िया, प्रचार व प्रसार समिति में सत्यनारायण सारडा, नितिन अग्रवाल, सुनील मिसर, नंदकिशोर वैद्य, बाबूभाई पटेल, बद्रीप्रसाद अग्रवाल, डॉ. राजकुमार अग्रवाल, निलेश सोमाणी, नंदकिशोर केला का समावेश है. व्यासपीठ व्यवस्था समिति में मांगीलाल शर्मा, किरण बियाणी, सुखानंद मंत्री, अतुल चांडक, आनंद दायमा, प्रसाद व्यवस्था समिति में नंदकिशोर अग्रवाल, हरकचंद अग्रवाल, गोविंद डोडिया, विजय अग्रवाल, रमेश अक्केवार, श्रीकिसन अग्रवाल, नितेशकुमार खत्री, मनीष गढ़िया, गोपाल जोशी, ओमप्रकाश लाहोटी, संजय अग्रवाल सेवाएं दे रहे हैं. महाप्रसाद समिति में सत्यनारायण अग्रवाल, जुगलकिशोर अग्रवाल, प्रवीण देवाणी, अशोक अग्रवाल, कचरुलाल भांगड़िया, भगवानदास मंत्री, अतुल चांडक, पप्पू जोशी, पुरुषोत्तम शर्मा, सुनील तापड़िया, धीरज रत्नपारखी, शैलेश दुरतकर, सुंदरलाल छावछरिया आदि मान्यवर व्यवस्था संभालेंगे. बता दें कि सदस्यों से स्थापित श्री गायत्री सत्संग मंडल के आज 375 सदस्य हैं. भागवत कथा प्रवक्ता प.पू. आचार्य दायमा ने मात्र 24 वर्ष की उम्र से ही ज्ञानगंगा की जिम्मेदारी ली है.

आज व कल साइन्स एक्सप्रेस अकोला में

व्यापक असंतोष के आगे झुका रेल प्रशासन

प्रतिनिधि, 26 जुलाई

अकोला- विश्व पर्यावरण के बदलाव की जानकारी जन-जन तक पहुंचाने के लिए साइन्स एक्सप्रेस देश भ्रमण पर निकली है. यह साइन्स एक्सप्रेस महाराष्ट्र के कुछ ही रेलवे स्टेशनों पर रुकने वाली थी, लेकिन राजनैतिक सक्रिय भूमिका के कारण अकोला के प्लेटफार्म नंबर 4 पर इसे 2 दिनों तक रोका जा रहा है. यह ट्रेन 27 तथा 28 जुलाई को सुबह 10 से शाम 5 बजे तक नागरिकों के देखने के लिए उपलब्ध रहेगी. अकोला जिले के लिए यह गौरवपूर्ण है. इस प्रदर्शनी का लाभ विद्यार्थियों, पर्यावरण प्रेमी, वरिष्ठ नागरिक, मातृशक्ति, युवा शक्ति एवं राष्ट्रप्रेमी नागरिकों से लेने का आव्हान सांसद संजय धोत्रे, विधायक गोवर्धन शर्मा, विधायक रणधीर सावरकर ने किया है. साइन्स एक्सप्रेस में विश्व पर्यावरण बदलाव की जानकारी व्यापक अध्ययन के आधार पर दी गई है. इस विशेष प्रदर्शनी का लाभ अकोला जिले के विद्यार्थियों को हो, इसी कारण इलेक्ट्रानिक मीडिया तथा अखबारों, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद, रेलवे यात्री संघ, वरिष्ठ नागरिक संघ की मांग को गंभीरता से लेते हुए रेलवे प्रशासन ने साइन्स एक्सप्रेस को मुर्तिजापुर समेत अकोला स्टेशन पर भी 2 दिनों के लिए रोकने का निर्णय किया है.

राखी पूर्णिमा को खंडग्रास चंद्रग्रहण

संवाददाता, 26 जुलाई

धामणगांव रेलवे- सावन सभी के लिए पसंदीदा और धार्मिक दृष्टि से पवित्र माह. नागपंचमी त्यौहार के उपलक्ष्य में बहुओं को मायके जाने का अवसर प्रदान करने वाला उत्साह बढ़ाने वाला है. भक्ति भाव बढ़ाकर आत्मचिंतन करने के लिए प्रेरित करने वाला सावन विगत 24 जुलाई से आरंभ हुआ. स्वतंत्रता व अगस्त क्रांति दिवस यह दो ऐतिहासिक पर्व सावन माह में आते हैं. इस बार राखी पूर्णिमा के दिन अर्थात 7 अगस्त को खंडग्रास चंद्रग्रहण है.

सावन की शुरूआत इस बार सोमवार से हुई और समाप्ति भी सोमवार को होगी. नागपंचमी से त्यौहारों का सिलसिला शुरू होता है. महाराष्ट्र में यह त्यौहार परंपरागत पद्धति से मनाया जाता है. बढ़ते शहरीकरण के बावजूद आज भी कहीं न कहीं नागपंचमी के झूले दिखाई देते हैं. बच्चे व युवतियां झूलने का आनंद लेते हैं. ग्रामीण क्षेत्र में विशालकाय पेड़ों पर झूला बंधा रहता है. गुरुवार, 27 जुलाई को नागपंचमी आ रही है. बहन-भाई के अटूट रिश्तों को परिदृढ़ करने वाला राखी पूर्णिमा त्यौहार 7 अगस्त को है. रक्षाबंधन को लेकर रंग-बिरंगी राखियां बिक्री के लिए बाजार में आ चुकी हैं. जन्माष्टमी और दहीहांडी का महाराष्ट्र में सर्वाधिक बोलबाला है.

श्रीकृष्ण जयंती के दूसरे दिन मंगलवार, 15 अगस्त को दहीहांडी और स्वतंत्रता दिवस एक साथ आ रहे हैं. दहीहांडी आयोजन को लेकर अभी अनिश्चितता बनी हुई है. स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण पश्चात दहीहांडी का रोमांच देखने को मिलेगा. हर सावन सोमवार को शिवभक्ति चल रही है. शिवरात्रि को यह भक्ति चरम पर होती है. रविवार 20 अगस्त को शिवरात्रि मनाई जाएगी. पारसी भाइयों का पतेती त्यौहार गुरुवार, 17 अगस्त को आ रहा है. किसानों के सुख-दुःख के साथी वृषभ को एक दिन आराम देकर पूजा करने का त्यौहार और उसे पूरन रोटी खिलाने का अवसर पोला प्रदान करता है. इस बार पोला 21 अगस्त को है. पोले से सावन माह का समापन होगा. 22 अगस्त को छोटा पोला रहेगा. इस दिन मांसाहार का आनंद एक माह के बंधन पश्चात उठाया जाएगा. विवाह पश्चात पहले साल नववधू मंगला गौर का पूजन करती हैं. गत 25 जुलाई को यह त्यौहार उत्साह से मनाया गया.

मायके जाने बेताब नववधू

चंद्रग्रहण, राखी पूर्णिमा और उपवास

इस बार सावन में नारली और राखी पूर्णिमा के दिन अर्थात 7 अगस्त को खंडग्रास चंद्रग्रहण है. यह चंद्रग्रहण रात 10.50 बजे शुरू हो रहा है. इसका पर्वकाल रात 12.49 तक है. अगर ग्रह के योग दोपहर 1 बजे से लगने से उसके पूर्व ही सबको भोजन करना है. जिन्हें सोमवार का उपवास है वे दोपहर 1 बजे के पहले फराल करें और सूर्यास्त पश्चात केवल तीर्थ प्राशण करें. राखी पूर्णिमा के दिन सुबह 11 से रात 10 बजे तक बहन अपने भाई को राखी बांध सकती है.

मनुष्य का जन्म बड़ा अनमोल

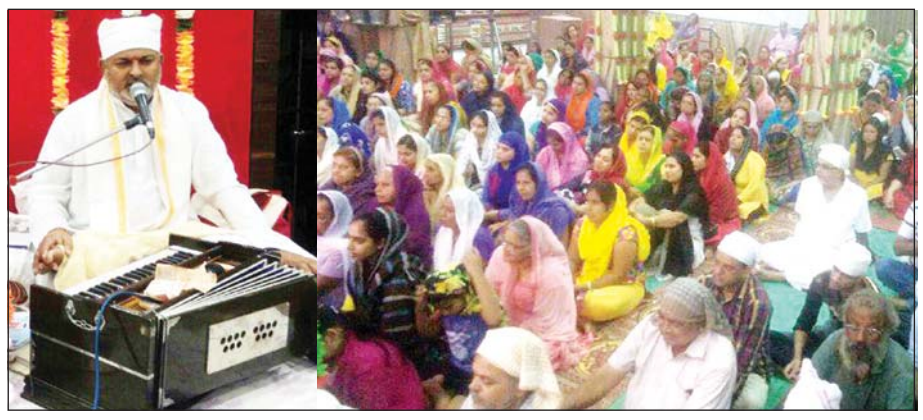

डॉ. संतोष महाराज का सत्संग

शिवधारा में चालीहा महोत्सव

प्रतिनिधि, 26 जुलाई

अमरावती- पूज्य संत डॉ. संतोषजी महाराज अपने बुधवार के प्रवचन में कहते हैं कि हम सब का ध्यान केंद्रित कराया. मनुष्य और पशु में एक जैसे लक्षण पाए गए हैं. जैसे निद्रा, भोग, भोजन, भय हम मनुष्य अपने स्थिर को ऊंचा उठाएं. संसारी सारी क्रियाओं के साथ-साथ हमारा ध्येय भक्ति करके प्रभु प्राप्ति भी होना चाहिए. मनुष्य जीवन अनमोल तब होगा जब भक्ति करके प्रभु नाम सिमरन करके, परोपकार व सेवा कार्य करके प्रभु प्राप्ति का लक्ष्य बनाएंगे. साक्षात्कार होगा. मुख से निकला हुआ वचन, कमान से निकला हुआ तीर, पुलिया के नीचे से बह गया पानी, वृक्ष को छूकर आगे चली गई हवा जैसे लौट नहीं सकते, वैसे बीता हुआ समय वापस नहीं आता यह बात ध्यान में रखते हुए सदा समय का सदुपयोग करें. रोज की दिनचर्या में धर्म-कर्म, समाज का उत्थान व राष्ट्र की सेवा रोज ही करनी चाहिए. क्योंकि जैसे बुधवार के बाद गुरुवार होगा, लेकिन जब शुक्रवार को जब सबेरे जगेंगे तो शुक्रवार ही होगा. कल शनिवार होगा मतलब कल कभी नहीं आता जो करना है आज ही करें.

इस श्रावण मास के पवित्र दिन, श्री झूलेलाल चालिहा के साथ पावन दिन पर शिवधारा आश्रम में महारुद्र अभिषेक चल रहा है. कालसर्प, पितृदोष, पुत्र संतान प्राप्ति जिसमें अमरावती के साथ-साथ बाहर गांव वालों ने भी लाभ उठाया.

जिनको भी कालसर्प दोष है, तो नागपंचमी के दिन खीर बनाकर नाग मंदिर में दे आएं एवं प्रत्येक सोमवार को कच्चा दूध शिवलिंग पर चढ़ाएं. सप्ताह में एक दिन रसोई घर के बीच में बैठकर भोजन खाएं. इस प्रकार के उपाय (समस्याओं के समाधान) महाराजिक प्रवचन सत्संग चैनल पर सुबह 8.30 बजे प्रसारित होता है.